कवर का शेष भाग

हम क्या उगाते हैं?

हम मस्तूल उगाते हैं जिस पर पाल बँधेगी।
हम वे फट्टे उगाते हैं
जो हवा के थपेड़ों का सामना करेंगे।
जहाज़ का तला, शहतीर, कोहनी;
हम पानी का जहाज़ उगाते हैं जब पेड़ उगाते हैं।

हम क्या उगाते हैं जब पेड़ लगाते हैं?
हम अपने और तुम्हारे लिए एक घर उगाते हैं।
हम बल्लियाँ, पटिए और फर्श उगाते हैं।
हम खिड़की, रोशनदान और दरवाज़े उगाते हैं।
हम छत के लट्ठे, शहतीर और उसके
तमाम हिस्से उगाते हैं।
हम घर उगाते हैं जब पेड़ लगाते हैं।

हम क्या उगाते हैं जब पेड़ लगाते हैं?
ऐसी हज़ारों चीज़ें तो हम हर दिन देखते हैं।
हम गुम्बद से भी ऊपर आने वाले
शिखर उगाते हैं।
हम अपने देश का झण्डा फहराने वाला
स्तम्भ उगाते हैं।
सूरज की गर्मी से छाया मानो मुफ्त ही उगाते हैं।
हम यह सब उगाते हैं जब पेड़ लगाते हैं।

हेनरी एबे
अँग्रेज़ी से अनुवाद - कबीर बाजपेयी

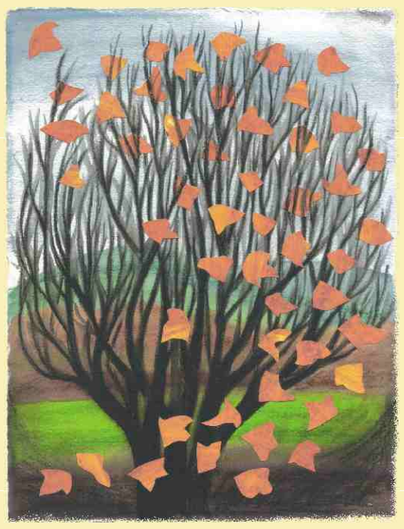

285 जून 2010

चकमक

बाल विज्ञान पत्रिका

2 बहुत समय पहले की बात है
4 बुध ग्रह की कुछ पहेलियाँ
6 दौड़
9 माथापच्ची
10 लड़का और बूढ़ा तीरंदाज़
12 मेरा पन्ना
14 चित्रपहेली
16 लाल किला कैसे बना?
20 चित्रों की भाषा
22 कहानियों के अण्डे
24 घरौंदा
24 जय श्रीकृष्ण पिपलिया सेठ
25 समझ किसे कहते हैं?
28 चुप्पा करबा
30 पापी
32

इस अंक में

4
बुध के अत्यन्त सुस्त घूर्णन के कारण ही शिएपरेली गच्चा खा गए थे।

6
पूरे भारतीय उपमहाद्वीप को गर्मियों के जाने और बारिश के आने का बेसब्री से इन्तज़ार रहता है... फिर एक दिन आता है एक खबरी खबर लाता है...

2
चोरों ने सिंचाई के काम आने वाला कुछ सामान उठाया और रफूचक्कर हो गए।

10
दो साल में उसे गाएँ इतनी छोटी नज़र आने लगीं मानो वे चूज़े हों।

24
एक गिलहरी बच्चे तीन चीन से आए हैं कोचीन

27
ला माँ, यह गठरी मुझे दे दे। रोहतक में इसे मेरे से ले लेना।

25
पक्षी डालियों पर शोर मचा रहे थे। गिलहरियाँ दौड़ रही थीं। दो छत्तों में मधुमक्खियाँ भी पाल रखी थीं सेठजी ने।

सम्पादन
सुशील शुक्ल
शशि सबलोक

सहायक सम्पादक
कविता तिवारी

सम्पादकीय सलाहकार
रेक्स डी रोज़ारियो

: आवरण चित्र :
सुजाशा दासगुप्ता

विज्ञान सलाहकार
सुशील जोशी

डिज़ाइन
दिलीप चिंचालकर

वितरण
विजय झोपाटे

सहयोग
मिहिर
प्रभात
कमलेश यादव

सदस्यता शुल्क
एक प्रतिः 20.00
वार्षिकः 200.00 (व्यक्तिगत)
300.00 (संस्थागत)
तीन सालः 500.00 (व्यक्तिगत)
700.00 (संस्थागत)
आजीवनः 3000.00 (व्यक्तिगत)
4000.00 (संस्थागत)

एस.आई.जी/
आई.सी.आई.सी.आई. बैंक के
वित्तीय सहयोग से
प्रकाशित।

सभी डाक खर्च हम देंगे।
चन्दा (एकलव्य के नाम से बने)
मनीऑर्डर/चैक से भेज सकते हैं।
भोपाल के बाहर के चैक में
80.00 रुपए अतिरिक्त जोड़ें।

एकलव्य
ई-10, शंकर नगर,
बीडीए कॉलोनी, शिवाजी नगर
भोपाल, म.प्र. 462 016
फोनः (0755) 4252927,
2671017, 2550976
फैक्सः (0755) 2551108
chakmak@eklavya.in
circulation@eklavya.in
www.eklavya.in